आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

डॉ. सैयद मो. बख्तेयार फातमी

Kripa Drishti Publications, Pune.

आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

[MODERN COGNITIVE PSYCHOLOGY]

डॉ. सैयद मो. बख्तेयार फातमी

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग, ओरिएण्टल कॉलेज,
पटना (बिहार).

Kripa-Drishti Publications, Pune.

Book Title: **आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान**

Author by: **डॉ. सैयद मो. बख्तेयार फातमी**

1st Edition

ISBN: **978-81-947839-9-2**

Published: **November 2020**

Publisher:

Kripa-Drishti Publications

A-503 Poorva Heights, Pashan-Sus Road, Near Sai Chowk,

Pune – 411021, Maharashtra, India.

Mob: +91-8007068686

Email: editor@kdpublications.in

Web: https://www.kdpublications.in

©**Copyright KRIPA-DRISHTI PUBLICATIONS**

All Rights Reserved. No part of this publication can be stored in any retrieval system or reproduced in any form or by any means without the prior written permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

आभार

आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के प्रथम संस्करण के प्रकाशन पर मुझे बहुत खुशी और संतोष हो रहा है। हम जानते हैं कि मनोविज्ञान का क्षेत्र निरंतर विकसित हो रहा है। अध्ययन एंव शोध की नई दिशाएँ उभर रही हैं। 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' उनमें से एक नवीनतम क्षेत्र है। इसके अंतर्गत विभिन्न मानसिक प्रकियाओं जैसे प्रत्यक्षण, चिंतन, अधिगन, स्मरण, बुद्धि आदि के महत्व पर प्रकाश डाला जाता है। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में इन सभी मानसिक क्रियाओं, इनके सिद्धांतों, नियमों एवं कारकों का अध्ययन किया जाता है| मनोविज्ञान की यह शाखा हमें अपने परिवेश और उसमें घटित घटनाओं की जानकारी तथा ज्ञान देकर उससे अभियोजित करने में सहायक है| यह पुस्तक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पर आधारित है। चुंकि, अब अनेक विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर भी 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया है। अत: आशा है कि दोनों ही स्तरों पर यह पुस्तक उपयोगी होगी

मनोविज्ञान विषय के एक छात्र, शोधार्थी और शिक्षक के रूप मे अपनी लगभग चार दशक की यात्रा में मैंने विषय से संबंधित छात्रों की उत्सुकता एवं समस्या, दोनों को बहुत गहराई से देखा एवं समझा है| इस अनुभव का उपयोग पुस्तक में विषय को रूचिकर ढंग से प्रस्तुत करने में हुआ है। इसी उद्देश्य से पुस्तक की भाषा को यथासंभव सरल रखने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक गुरूवार प्रो. (डॉ.) दिनेशचंद्र कोचर जी को समर्पित है। इंटरमीडिएट के दिनों से ही उनका स्नेहिल सान्निध्य मुझे प्राप्त रहा है। यह पुस्तक उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद से संभव हो पाई है।

इस पुस्तक के लेखन में जिन स्त्रोतों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उपयोग हुआ है, उनके लेखकों, प्रकाशकों का मैं आभारी हूँ। जिन मित्रों एवं सहकर्मियो ने विविध रूप से इसे प्रस्तुत करने में मदद पहुंचाई है, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हुँ। पत्नी और पुत्रों के सहयोग के बिना यह प्रस्तृति संभव नहीं हो पाती, उनके लिए क्या कहूँ। उनके लिए कुछ कहना, औपचारिक होना होगा। इस पुस्तक के सुरुचिपुर्ण एवं ससमय प्रकाशन के लिए मैं प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। विद्वत्-जनों से आग्रह है कि पुस्तक की त्रुटियों एवं कमियों से अवगत कराएं। उनकी सदाशयता के लिए मैं ऋणी रहूँगा|

डॉ. सैयद मो. बख्तेयार फातमी

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
मनोविज्ञान विभाग, ओरिएण्टल कॉलेज,
पटना (बिहार).

समर्पण

परम श्रद्धेय गुरूवर प्रोफेसर **डॉ. दिनेशचन्द्र कोचर**

(पूर्व अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार)

के कर कमलों में सादर समर्पित

INDEX

अध्याय 1: संज्ञान.....1

1.1 परिचय :.....1
1.1.1 सूचना संसाधन के रूप में संज्ञान (Cognition as Information Processing) :....1
1.1.2 मानसिक प्रतीकों के प्रहस्तलन के रूप में संज्ञान (Cognition as Manipulation of Mental Symbols) :.....1
1.1.3 समस्या समाधान के रूप में संज्ञान (Cognition as Problem Solving) :.....2
1.1.4 चिन्तन के रूप में संज्ञान (Cognition as Thinking) :.....2
1.1.5 ज्ञान प्राप्त करने, स्मरण, प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन, निर्णय, समस्या समाधान, तर्कना अधिगम, कल्पना, सम्प्रत्ययीकरण एवं भाषा प्रयोग के रूप में संज्ञान (Cognition as knowing, remembering, perceiving, thinking, judging, problem solving, reasoning, learning, imagining, conceptualizing and using language) :.....2
1.2. संज्ञान :.....4
1.2.1 भारतीय दृष्टि और संज्ञान :.....4
1.2.2 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान :.....4
1.2.3 संज्ञानवाद :.....5
1.3. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का स्वरूप:.....5
1.3.1 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की परिभाषा (Definition of Cognitive Psychology) :6
1.3.2 संज्ञानात्मक मनोवज्ञिान के उपयोग :.....7
1.4 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास :.....8
1.4.1 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य :.....11
1.5 समकालीन संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का आविर्भाव :.....13
1.6 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की वर्तमान स्थिति (The Current Status of Cognitive Psychology) :.....15
1.7 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में अनुसंधान की विधियाँ (Methods of Cognitive Psychology) : 16
1.7.1 प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method) :.....16
1.7.2 कम्प्यूटर आधृत विधि (Computer Based Method) : 16
1.8. संज्ञानात्मक मनोवज्ञिान के उपागम :.....17
1.8.1 सूचना संसाधन उपागम :.....17

1.8.2 सम्बन्धवादी उपागम : 17
1.9 तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience) : 18
1.10 कृत्रिम बुद्धि : 19

अध्याय 2: संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र.....22

2.1 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र (Scope or Domain of Cognitive Psychology) : .22
2.2 संज्ञानात्मक न्यूरोविज्ञान (Cognitive Neuroscience) : 22
2.3 प्रत्यक्षण (Perception) : 22
2.4 पैटर्न पहचान (Pattern Recognition) : 22
2.5 अवधान (Attention) : 23
2.6 चेतना (Consciousness) : 23
2.7 स्मृति (Memory) : 23
2.8 चितंन एवं संप्रत्यय निर्माण (Thinking and Concept Formation) : 24
2.9 विकासात्मक मनोविज्ञान (Developmental Psychology) : 24
2.10 भाषा (Language) : 25
2.11 प्रतिमावली (Imagery) : 25
2.12 ज्ञान का निरूपण (Representation of knowledge) : 26
2.13 मानव बुद्धि एवं कृत्रिम बुद्धि (Human Intelligence and Artificial Intelligence) : 26

अध्याय 3: संज्ञानात्मक विकास.....27

3.1 संज्ञानात्मक विकास : 27
3.1.1 संज्ञानात्मक विकास क्या है? : 27
3.1.2 संज्ञानात्मक विकास के सामाजिक आधार : 28
3.2 संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत : 29
3.3 संज्ञानात्मक विकास का सम्प्रत्यय : 29
3.4 पियाजे का सिद्धांत : 30
3.4.1 परिचय : 30
3.5 पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त : 31
3.5.1 संवेदी पेशीय अवस्था : 32
3.5.2 पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था : 33
3.5.3 मूर्त संक्रियात्मक अवस्था : 34
3.5.4 औपचारिक या अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था : 35
3.5.5 पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की विशेषताएं : 35
3.6 पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धान्त के दोष : 36

3.7 पियाजे के सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा :.....36
3.7.1 समयावधि :.....36
3.7.2 विकास क्रम :.....37
3.7.3 अवस्था विशेष में विकास : 37
3.7.4 स्वाभाविक वृद्धि और विकास द्वारा संज्ञानात्मक विकास : 37
3.8 पियाजे के सिद्धांत के उपयोग और अनुप्रयोग : 37
3.8.1 चिन्तन की भिन्नता का ज्ञान :.....38
3.8.2 बालक की सक्रियता का ज्ञान :.....38
3.8.3 पूर्वज्ञानाधारित संज्ञानात्मक विकास : 38
3.8.4 संज्ञानात्मक सहजता क्षेत्र का ज्ञान : 38
3.8.5 निर्माणवादी दृष्टिकोण का विकास :.....38
3.8.6 कक्षा कक्षीय वातावरण में अपेक्षित क्रियाओं का ज्ञान : 39
3.8.7 पियाजे के सिद्धान्त का शिक्षा में उपयोग :.....40

अध्याय 4: मनोभौतिकी.....41

4.1 परिचय :.....41
4.2 मनोभौतिकी का अर्थ :.....42
4.2.1 प्रस्तावना : 42
4.2.2 उद्देश्य :.....43
4.2.3 अर्थ एवं स्वरुप : 44
4.3 मनोभौतिकी की मूलभूत समस्याएं : 45
4.3.1 अल्पतम उद्दीपकों की पहचान से संबंधित समस्या (Problems Relating to Detection of Minimal Stimuli) :.....45
4.3.2 अल्पतम उद्दीपक अन्तर की पहचान से संबंधित समस्या (Problems Relating to Detection of Minimal Stimulus Differences) :.....46
4.3.3 उद्दीपकों के बीच संबंधों के निर्णय से संबंधित समस्या (Problems Relating to the Judgement of Relations Among Stimuli) :.....46
4.3.4 अभिज्ञान से सम्बंधित समस्याएं (Detection Problems) :.....47
4.4 मनोभौतिकी के कुछ महत्वपूर्ण संप्रत्यय :.....49
4.4.1 वेबर का नियम : 49
4.4.2 फेकनर का नियम : 50
4.4.3 फेकनर के नियम की सीमाएं (Limitations of Fechner Law) :.....52
4.5 प्राचीन मनोभौतिकीय विधियाँ (Classical Psychophysical Method) : 57

4.5.1 सीमा विधि (Method of Limits) : 58
4.5.2 स्थिर उद्दीपकों की विधि (Method of Constant Stimuli) :.....64
4.5.3 अभियोजन विधि (Method of Adjustment) :.....68
4.6 मनोभौतिकी की विधियाँ: 73
4.7 विश्लेषण एवं निष्कर्ष : 76
4.8 सारांश : 76
4.9 शब्दावली :.....77

अध्याय 5: अवधान.....78

5.1 अवधान का अर्थ एवं विशेषताएं :.....78
5.1.1 अवधान का अर्थ : 78
5.1.2 अवधान या ध्यान (Attention) : 79
5.1.3 अवधान की परिभाषा : 79
5.1.4 अवधान की विशेषताएँ (Characteristics of Attention) : 79
5.2 ध्यान भंग :.....80
5.2.1 अवधान भंग होने के उपाय : 81
5.2.2 अवधान का विस्तार ज्ञात करने हेतु प्रयोग :.....81
5.3 अवधान के प्रकार (Kinds of Attention):.....82
5.3.1 ऐच्छिक अवधान (Voluntary Attention):.....82
5.3.2 अनैच्छिक अवधान (Involuntary Attention): 82
5.3.3 आदतजन्य अवधान (Habitual Attention): 83
5.3.4 विचारात्मक अवधान (Ideational Attention):.....83
5.3.5 संश्लेषणात्मक-विश्लेषणात्मक अवधान (Synthetical-Analytical Attention): 83
5.4 अवधान के निर्धारक (Determinants of Attention): 83
5.4.1 भौतिक विशेषताएँ (Physical Characteristics): 84
5.4.2 परितुलित विशेषताएँ (Collative Characteristics) : 86
5.4.3 आन्तरिक निर्धारक (Internal Determinants) :.....87
5.4.4 उन्मुखताकारी अनुक्रिया (The Orientation Response) : 89
5.5 चयनात्मक अवधान का स्वरुप : (Nature of Selective Attention) 90
5.6 चयनात्मक अवधान के सिद्धान्त (Theories of Selective Attention) : 91
5.6.1 ब्राडवेन्ट का निस्यन्दक सिद्धान्त (Broadbent's Filter Theory) : 91
5.6.2 स्नायुदैहिक अवरोध (Neurophysiological Blocking) : 92
5.6.3 द्विभाजन सूचना संशाधन (Dichotic Information Processing) : 92
5.6.4 इस सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of this Theory) :.....93

5.6.5 निस्यन्दक-क्षीणन सिद्धान्त (Filter Attenuation Theory) : 93
5.7 दीर्घीकृत अवधान के निर्धारक (Determinants of Sustained Attention) :.....94
5.7.1 संवेदी कारक (Sensory Factors) :.....94
5.7.2 संकेत या उद्दीपक उत्कृष्टता (Signal Conspicuity) : 94
5.7.3 पृष्ठभूमि घटना दर (Background Event Rate) :.....95
5.7.4 सामयिक एवं स्थानिक अनिश्चितता (Temporal and Spatial Uncertainty) : ..95
5.7.5 परिणाम ज्ञान (Knowledge of Results) : 96
5.8 दीर्घीकृत अवधान के सिद्धान्त (Theories of Sustained Attention) : 97
5.8.1 प्रत्याशा सिद्धान्त (Expectancy theory) : 97
5.8.2 जेरीसन का सिद्धान्त (Jerison's Theory) : 99
5.8.3 संकेत पहचान सिद्धान्त (Signal Detection Theory) : 100
5.8.4 उत्तेजन सिद्धान्त (Arousal Theory) : 101
5.8.5 अभ्यसन सिद्धान्त (Habituation Theory) :.....103
5.9 दीर्घाकृत अवधान के सिद्धान्तों की वर्तमान स्थिति (Current status of theories of sustained attention) :.....105

अध्याय 6: प्रत्यक्षीकरण 106

6.1 प्रत्यक्षीकरण का स्वरुप : 106
6.1.1 प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा : (Definition of Perception) 108
6.1.2 प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ (Characteristics of Perception) : 108
6.1.3 सवेदना की विशेषतायें (Characteristics of Sensation) : 109
6.1.4 प्रत्यक्षीकरण का अर्थ व स्वरूप (Meaning & Nature of Perception) : 110
6.1.5 प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण (Analysis of Perception) : 110
6.1.6 संवेदना व प्रत्यक्षीकरण मे अन्तर (Distinction between Sensation & Perception):.....111
6.1.7 प्रत्यक्षीकरण की विशेषताएँ (Characteristics of Perception) : 111
6.1.8 प्रत्यक्षीकरण का शिक्षा मे महत्त्व (Importance of Perception in Education) : 112
6.2 प्रत्यक्षण का दैहिक उपागम या सिद्धान्त (Physiological Approach or Theory of Perception) : 113
6.3 गिब्सन का उपागम (Gibsonian Approach) : 116
6.4 सूचना-संसाधन उपागम (Information Processing Approach) :.....117
6.5 गेस्टाल्ट उपागम या सिद्धान्त (Gestalt approach or Theory) : 119

6.5.1 आकृति-पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण (Figure - Ground Perception) : 119
6.5.2 प्रत्यक्षणात्मक संगठन का नियम (Principles of Perceptual Organisation) : 121
6.5.3 समाकृतिकता का सिद्धान्त (Principle of Isomorphism) : 124
6.5.4 क्षेत्र बल (Field Forces) : 125
6.6 व्यवहारिक उपागम या व्यवहारिक सिद्धान्त: 128
6.7 निदेश-अवस्था सिद्धान्त : (Directive state theory) 130
6.8 आकार प्रत्यक्षण: 136
6.8.1 आकार प्रत्यक्षण में आकृति तथा पृष्ठभूमि (Figure and Background in form Perception) : 136
6.8.2 आकार प्रत्यक्षण में संगठन (Organisation in Form Perception) : 138
6.9 गहराई तथा दूरी का प्रत्यक्षण : तीसरी विमा (Perception of Distance and Depth : Third Dimension) : 138
6.9.1 एकनेत्री संकेत (Monocular Cues) : 139
6.9.2 द्विनेत्री संकेत (Binocular cues) : 143
6.10 प्रत्यक्षणात्मक रक्षा : (Perceptual defence) 145
6.11 प्रत्यक्षणात्मक निगरानी (Perceptual Vigilance) : 145
6.12 व्यक्तित्व एवं संज्ञानात्मक शैली (Personality and Cognitive Style) : 147
6.13 प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता और सामान्यीकरण : 148
6.13.1 प्रत्यक्षणात्मक स्थिरता : (Perceptual Constancy) 148
6.13.2 प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक : 152
6.14 समय का प्रत्यक्षण : चौथी विमा (Perception of Time : Fourth Dimension) : 152
6.14.1 आन्तरिक कालमापी प्राकल्पना (Internal Timer Hypothesis) : 152
6.14.2 घटना-संसाधन पूर्वकल्पना (Events Processing Hypothesis) : 153
6.14 गति प्रत्यक्षण (Perception of Movement) : 154
6.14.1 शेरिंगटन का सिद्धान्त (Sherrington theory) : 155
6.14.2 हेल्महोल्ज का सिद्धांत (Helmholtz Theory) : 155
6.14.3 ग्रिगोरी का सिद्धान्त (Gregory Theory) : 156
6.16 प्रत्यक्षणात्मक सीखना (Perceptual Learning) : 160
6.17 ऐम्स का संव्यवहार उपागम (Ames' Transactional Approach) : 161

अध्याय 7: स्मृति एवं विस्मरण 163

7.1 स्मृति परिभाषाऐ : 163
7.2 स्मृति के अंग / स्मरण की प्रक्रिया / स्मृति के तत्व : 164

7.3 स्मृतियों के प्रकार (Variety of Memories) :.....165
7.4 स्मृति की विशेषतायें या लक्षण :.....166
7.4.1 स्मृति की उन्नति के उपाय : 166
7.5 स्मरण करने की विधियां (Methods of Memorizing) :.....167
7.6 विस्मरण परिभाषाएँ :.....169
7.6.1 विस्मृति : 169
7.6.2 परिभाषाएँ: 169
7.6.3 विस्मृति का महत्व:.....170
7.7 विस्मृति के प्रकार (Kinds of Forgetting) :.....171
7.8 विस्मृति के कारण : 171
7.9 विस्मृति का निवारण:.....172
7.10 विस्मरण के सिद्धान्त :.....173

अध्याय 8: समस्या समाधान, तर्कना तथा चिन्तन.....176

8.1 समस्या समाधान के प्रक्रम तथा निर्धारक (Problem Solving of Steps and Determinants) :.....176
8.1.1 समस्या के स्वरूप को समझना (Understanding the Nature of Problem) : 176
8.1.2 समाधान के विषय में सोंचना (Generating Solution) : 176
8.1.3 समस्या समाधान के विभिन्न उपायों में से उत्तम उपाय के बारे में निर्णय करना (Judging the best among the likely solutions) :.....177
8.1.4 उत्तम उपाय को कार्यान्वित करना (Carrying out the best solution) : 177
8.1.5 कार्यान्वित समाधान का मूल्यांकन करना (Evaluation of solution carried out) : 177
8.2 आगमनात्मक, निगमनात्मक तर्कना (Inductive, Deductive Reasoning) : 180
8.3 परिकल्पना परीक्षण (Imagination Test) : 180
8.4 भाषा तथा चिन्तन (Language and Thinking) : 181

अध्याय 9: मनोवैज्ञानिक प्रकार्यों में वैयक्तिक भिन्नताऐं(बुद्धि) 183

9.1 सामान्य मानसिक योग्यता :.....183
9.2 सैद्धान्तिक उपागमः स्पीयरमैन :.....184
9.2.1 स्पीयरमैन का बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत :.....184
9.3 थर्सटन का बुद्धि का सिद्धांत : 185
9.4 गिलफोर्ड का बुद्धि-संरचना का सिद्धांत : 186

9.4.1 विषय वस्तु आयाम : 187
9.4.2 संक्रिया आयाम : 188
9.4.3 उत्पाद आयाम :.....188
9.5 जेन्सन वर्नन :.....189
9.5.1 पदानुक्रमिक सिद्धान्त : 190
9.6 स्टर्नबर्ग का बुद्धि का त्रिचापीय सिद्धांत : 190
9.6.1 घटकीय या विश्लेषणात्मक बुद्धि : 191
9.6.2 प्रयोगात्मक या सृजनात्मक बुद्धि : 191
9.6.3 सांदर्भिक या प्रायोगिक बुद्धि : 191
9.6.4 बुद्धि का पास (PASS) सिद्धांत :.....192
9.6.5 पियाजे :.....193
9.7 सृजनशीलता : 195
9.7.1 अर्थ एवं परिभाषा :.....195
9.7.2 सृजनात्मक चिन्तन : 196
9.7.3 सृजनशीलता के प्रकार (Types of Creativity) : 196

डॉ . सैयद मो . बख्तेयार फातमी

आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के प्रथम संस्करण के प्रकाशन पर मुझे बहुत खुशी और संतोष हो रहा है। हम जानते हैं कि मनोविज्ञान का क्षेत्र निरंतर विकसित हो रहा है। अध्ययन एंव शोध की नई दिशाएँ उभर रही है। 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' उनमें से एक नवीनतम क्षेत्र हैं। इसके अंतर्गत विभिन्न मानसिक प्रकियाओं जैसे प्रत्यक्षण, चिंतन, अधिगन, स्मरण, बुद्धि आदि के महत्व पर प्रकाश डाला जाता है। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में इन सभी मानसिक कियाओं, इनके सिद्धांतों नियमों एवं कारकों का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान की यह शाखा हमें अपने परिवेश और उसमें घटित घटनाओं की जानकारी तथा ज्ञान देकर उससे अभियोजित करने में सहायक है। यह पुस्तक स्नातकोत्तर पाठयकम पर आधारित है। चुंकि, अब अनेक विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर भी 'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान' को पाठयाकम में सम्मिलित कर लिया गया है। अतः आशा है कि दोनों ही स्तरों पर यह पुस्तक उपयोगी होगी।

मनोविज्ञान विषय के एक छात्र, शोधार्थी और शिक्षक के रूप मे अपनी लगभग चार दशक की यात्रा में मैंने विषय से संबंधित छात्रों की उत्सुकता एवं समस्या, दोनों को बहुत गहराई से देखा एवं समझा है। इस अनुभव का उपयोग पुस्तक में विषय को रूचिकर ढंग से प्रस्तुत करनें में हुआ है। इसी उद्देश्य से पुस्तक की भाषा को यथासंभव सरल रखने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक गुरूवार प्रो . (डॉ .) दिनेशचंद कोचर जी को समर्पित है। इंटरमीडिएट के दिनों से ही उनका स्नेहिल सान्निध्य मुझे प्राप्त रहा है। यह पुस्तक उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं आशीर्वाद से संभव हो पाई है।

इस पुस्तक के लेखन में जिन स्त्रोतों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उपयोग हुआ है, उनके लेखकों, प्रकाशकों का मैं आभारी हूँ। जिन मित्रों एवं सहकर्मियों ने विविध रूप से इसे प्रस्तुत करने में मदद पहुँचाई है, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। पत्नी और पुत्रों के सहयोग के बिना यह प्रस्तुति संभव नहीं हो पाती, उनके लिए क्या कहूँ। उनके लिए कुछ कहना, औपचारिक होना होगा। इस पुस्तक के सुरूचिपुर्ण एवं समय प्रकाशन के लिए मैं प्रकाशक के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। विद्वत् जनों से आग्रह है कि पुस्तक की त्रुटियों एवं कमियों से अवगत कराएँ। उनकी सदाशयता के लिए मै ऋणी रहूँगा। डॉ . सै . मो बख्तेयार फातमी

KRIPA DRISHTI PUBLICATIONS

KRIPA-DRISHTI PUBLICATIONS
A-503 POORVA HEIGHTS, PASHAN-SUS ROAD, NEAR SAI CHOWK,
PUNE – 411021, MAHARASHTRA, INDIA.
MOB: +91 8007068686
EMAIL: EDITOR@KDPUBLICATIONS.IN
WEB: HTTPS://WWW.KDPUBLICATIONS.IN

Price: ₹325

ISBN: 978-81-947839-9-2